प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पन्तनगर, जिला– ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

गाजरघास जागरूकता अभियान का समापन

पंतनगर। 23 अगस्त 2023। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वित्त पोषित एवं खरपतवार विज्ञान निदेशालय, जबलपुर (मध्य प्रदेश) के तत्वाधान में खरपतवार नियंत्रण परियोजना के अर्न्तगत सस्य विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय द्वारा गाजरघास जागरुकता सप्ताह का समापन नॉरमन ई. बोरलॉग फसल अनुसंधान केन्द्र, पंतनगर में आयोजित किया गया। जिसकी अध्यक्षता निदेशक शोध डा. ए.एस. नैन द्वारा की गई। डा. नैन ने कहा कि गाजरघास जागरूकता अभियान को आने वाले वर्ष में विश्वविद्यालय स्तर पर आयोजित करेगें तथा उन्होनें विश्वविद्यालय के अंर्तगत आने वाले प्रत्येक केन्द्र के संयुक्त निदेशकों से कहा कि वे अनुसंधान केन्द्रों पर गाजरघास को पूर्णतयाः समाप्त करने का प्रण ले जिससे गाजरघास का पूर्णतया उन्मूलन किया जा सके। उन्होंने बताया कि गाजरघास के सम्पर्क में आने से खाज–खुजली, गर्दन, चेहरे तथा बाहों की चमड़ी सख्त होकर फट जाती है जिस कारण घाव बन जाते है जिसका निदान करना असम्भव हो जाता है। इस घास को नियंत्रण करने का सबसे अच्छा उपाय यह है कि इसे जड़ से उखाड़ कर जला दे या गड्डे में दबा दें क्योंकि इसके नियंत्रण के लिए प्रति वर्ष रासायनिक नियंत्रण के लिए लगभग 11,800 करोड़ रूपये की लागत आती है। ये ऑकड़े 2010 के सर्वे के अनुसार है जबकि वर्तमान समय में ये लागत और भी अधिक हो गई है।

सस्य विज्ञान विभागाध्यक्ष डा. एम. एस. पाल द्वारा गाजरघास पर प्रकाश डालते हुए बताया कि गाजरघास (पार्थेनियम हिस्ट्रोफोरस) जिसको अलग अलग स्थानों पर कांग्रेस घास चटक चॉदनी, गंधी बूटी आदि नामों से जाना जाता है बहुत ही हानिकारक एवं विशैला पौधा है इसे हम सब को मिलकर समाप्त करना अति आवश्यक है। इसका जैविक नियंत्रण मैक्सीकन बीटल (जाइगोग्रामा बाईकोलोरेटा) द्वारा भी किया जा सकता हैं। एक वयस्क बीटल एक पार्थीनियम के पूर्ण पौधें को 6–8 सप्ताह में खा जाता है। इस बीटल में प्रजनन की अद्भुत क्षमता होती हैं एक स्थान पर जहॉ पार्थीनियम अच्छी मात्रा में हो कम से कम 500 से 1000 तक वयस्क बीटल छोड़ने चाहिए। फसल अनुसंधान केन्द्र के संयुक्त निदेशक डा. एस.के. वर्मा ने बताया कि इस अभियान को हम आगे जारी रखेगें और गाजरघास को पूर्णतया समाप्त करने में विश्वविद्यालय का सहयोग करेगें साथ ही साथ बताया कि गाजरघास के पौधे में छोटे –छोटे रोयें पाये जाते है जो शरीर के सम्पर्क में आने पर दाद, खाज, खुजली आदि पैदा करते है। धीरे –धीरे ये दाद एक्जिमा का रूप ले जाता है तथा परागकणों के श्वसन तंत्र में जाने से श्वास संबंधित बीमारियां जैसे अस्थमा आदि होने की संभावना होती है। ।

इस अवसर पर फसल अनुसंधान केन्द्र के सहनिदेशक डा. ए.पी. सिंह, सस्य विज्ञान विभाग के वैज्ञानिक खरपतवार परियोजना के स्टाफ के सदस्यों एवं फसल अनुसंधान केन्द्र के कर्मचारी सहित लगभग 100 लोगों ने प्रतिभाग लिया। खरपतवार प्रबंधन परियोजना अधिकारी डा. एस.पी. सिंह ने इस जागरूकता सप्ताह के अंतर्गत प्रतिदिन चलाये गये अभियान को चलचित्र के माध्यम से प्रदर्शित किया साथ में समाचार पत्रों एवं पत्रिका में गाजरघास से संबंधित प्रकाशित समाचार से भी सभी उपस्थित सदस्यों को अवगत कराया। डा. एस.पी. सिंह ने बताया कि भूमि गीली होने पर खरपतवार को हाथों में पॉलीथीन या दस्तानें पहनकर उखाड़ देना चाहिए और अच्छी तरह जला कर नष्ट कर देना चाहिए। डा. एस. पी. सिंह ने बताया कि लगभग 500 से ऊपर लोगों तक प्रत्यक्ष रूप से तथा मीडिया एवं यूटूब के माध्यम से इन सात दिनों हजारों लोगों तक पंहुच करके पार्थीनियम के बारे में जानकारी दी। अंत में डा. एस.पी. सिंह ने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी उपस्थित महानुभावों, वैज्ञानिको एंव परियोजना से जुडे एस.आर.एफ., आर.एफ., डी.पी.ए. एवं श्रमिकों को धन्यवाद किया।

गाजरघास उन्मूलन की जानकारी देते वैज्ञानिक।

निदेशक संचार